Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

फसल मौसम सतर्कता समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की तेइसवीं बैठक की संस्तुतियॉं

दिनॉक : 10 मार्च, 2010
समय: 11.00 बजे
स्थान: उपकार सभाकक्ष

क्राप वेदर वाच ग्रुप की वर्ष 2009–10 की तेइसवीं बैठक उपकार सभाकक्ष में डा0 आर0 एस0 राठौर, उप महानिदेशक की अध्यक्षता में दिनॉक 10 मार्च, 2010 को सम्पन्न हुई। बैठक में न0 दे0 कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद, भारतीय चारा एवं चारागाह अनुसंधान संस्थान, झॉसी के मौसम वैज्ञानिकों एवं फसल वैज्ञानिकों, पशुपालन विभाग, कृषि विभाग, रिमोट सेन्सिंग अप्लीकेशन सेंटर, लखनऊ, रेशम विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त यूनाइटेड भारत के समाचार पत्र के संवाददाता ने भी भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, नई दिल्ली से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं मौसम उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के आधार पर प्रदेश में इस सप्ताह (दिनॉक 10 से 16 मार्च, 2010 तक) आकाश साफ रहेगा एवं वर्षा की कोई सम्भावना नहीं है। पश्चिमी उत्तर प्रदेथ में दिनांक 15 मार्च को कहीं–कहीं आकाश में हल्के बादल छाये रहने की सम्भावना है लेकिन वर्षा के कोई आसार नहीं है। प्रदेश के लगभग सभी अंचलों में हवा सामान्य से अधिक गति से (4 से 11 कि0मी0 प्रति घण्टा) मुख्यतः उत्तरी पश्चिमी/दक्षिणी पश्चिमी दिशा में चलने की सम्भावना है। अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान सामान्य से 1–2 डिग्री अधिक रहने के आसार है। कुल मिलाकर प्रदेश में इस सप्ताह मौसम शुष्क रहेगा।

कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्राप्त ऑकड़ो के अनुसार दिनांक 03 मार्च, 2010 तक प्रदेश में इस वर्ष जायद फसलों का कुल आच्छादन लक्ष्य पिछले वर्ष के 14 लाख हे0 के सापेक्ष इस वर्ष 25.06 लाख हे0 रखा गया है एवं जायद के मुख्य फसलों की बुआई का कार्य प्रगति पर है

प्रदेश में मौसम के इस परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:–

गेहूँ

- तेज हवा से फसल को गिरने से बचाने के लिये सायंकाल जब हवा मन्द हो तो आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई करें।
- अनावृत्त कण्डुआ से रोगग्रस्त पौधों को खेत से सावधानीपूर्वक निकाल कर अन्यत्र ले जाकर जला दें जिससे गेहूं की स्वस्थ बालियां प्रभावित न हो। प्रकोप दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत या

कार्बाक्सीन 75 प्रतिथत का संस्तुति अनुसार प्रयोग करें।

- गेहूं की खड़ी फसल में चूहों द्वारा क्षति पहुंचाये जाने की दशा में रोकथाम हेतु ग्राम स्तर पर जिंक फास्फाइड अथवा बेरियम कार्बोनेट में बने जहरीले चारे का प्रयोग करें।
- खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप होने पर क्लोरपाइरीफास 20 ई0सी0 2–3 लीटर प्रति हे0 की दर से सिंचाई के पानी के साथ अथवा बालू में मिलाकर प्रयोग करें।

दलहनी फसलें

चना/मसूर

- चने में फली छेदक कीट की रोकथाम के लिए नीम के बीजों की गिरी का सत 5 प्रतिशत अथवा इण्डोसल्फान 35 ई0सी0 का 1.5 से 2.0 लीटर अथवा मैलाथियान 50 ई0सी0 2.0 लीटर को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

मटर

- विलम्ब से बोई मटर में फली बेधक कीट की रोकथाम के लिए फसल पर 5 प्रतिशत मैलाथियान चूर्ण 30 कि0ग्रा0 का बुरकाव अथवा इण्डोसल्फान 35 ई0सी0 1.25 ली0 या मोनोकोटोफास 36 ई0सी0 750 मिली0 का छिड़ाकाव प्रति हे0 की दर से करें।

अरहर

- फली बेधकों के नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफास 36 ई0सी0 1 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

जायद फसलें

उर्द

- किसान उर्द की प्रजातियों यथा नरेन्द्र उर्द–1, आजाद उर्द–1, उत्तरा, आजाद उर्द–2 तथा शेखर–2 की बुवाई 15 मार्च तक पूर्ण करने की कोशिश करें।

मूँग

- मूँग की पीला मोजेक रोधी/सहिष्णु प्रजातियों जैसे–पी0डी0एम0–139, पंत मूँग–2, नरेन्द्र मूँग–1, मालवीय जाग्रति (एच0यू0एम0–2), मूँग जनप्रिया तथा मालवीय ज्योति आदि की बुआई प्रारम्भ करें।

सूरजमुखी

- सूरजमुखी की संकुल किस्में जैसे मार्डन, सूर्या एवं संकर किस्मों जैसे के0वी0एस0एच0–1, एस0एच0–3322 तथा एम0एस0एफ0एच0–17 की बुवाई कृषक शीघ्र पूर्ण करने की कोशिश करें।
- अच्छे अंकुरण के लिये बीज को 12 घंटे पानी में भिगोकर रखें तथा पानी से निकालने के बाद 3 से 4 घंटे तक छाया में रखने के बाद ही बुआई करें।

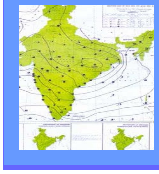

मूंगफली

- मूंगफली की प्रजातियों यथा डी.एच.–86, आई.सी.जी.एस.–44, आर.–9251, टी.जी.–37ए, आर–8808 तथा आई.सी.जी.एस.–1 की बुआई 15 मार्च तक पूर्ण कर लें।

बाजरा

- बाजरे की संकुल किस्में जैसे–आई.सी.एम.वी.–221, आई.सी.टी.पी.–8203,राज–171, पूसा कम्पाजिट–383, संकर किस्में 86 एम–52, जी.एच.बी.–526, पी.वी.–180 तथा जी.एच.बी.–558 की बुआई करें।

गन्ना

- पूर्वी व मध्य क्षेत्र में बसन्तकालीन गन्ने की बुआई प्रत्येक दशा में माह के अन्त तक समाप्त कर लेनी चाहिए।
- पूर्वी व मध्य क्षेत्र में जमाव उपरान्त तुरन्त हल्की सिंचाई (बुवाई के 30–35) दिन बाद करें तथा ओट आने पर गुड़ाई करें।
- शरदकालीन गन्ने के साथ अन्तः फसल यदि खड़ी हो तो आवश्यकतानुसार विशेषकर गेहूं में हल्की सिंचाई करें।
- शरदकालीन गन्ने में यदि फरवरी माह में यूरिया की टापड्रेसिंग न किये हो तो मार्च में सिंचाई करें तथा 132 किग्रा0/हे0 यूरिया टापड्रेसिंग करें।
- फसल की परिवक्वता के आधार पर बावग गन्ने की कटाई करें जिस खेत में पेड़ी फसल लेनी हो तो उसकी कटाई इस माह में अवश्य करें। बावग गन्ने की कटाई उपरान्त खेत में मेड़ गिराने के उपरान्त ठूठों की छंटाई पंक्तियों के दोनों तरफ गुड़ाई, 200 किग्रा0 यूरिया/हे0 के पंक्ति के दोनों तरफ प्रयोग एवं भूमि में मिलाना तथा रिक्त स्थानों की पूर्व अंकुरित पैड़ों से भराई करें।
- शरदकालीन बावग गन्ने में यदि चोटी बेधक/अंकुर बेधक से ग्रसित पौधा हो तो उसे भूमि के सतह से काटकर निकाल देना चाहिए जिससे उसकी अगली पीढ़ी का आपतन कम हो जाय।
- खेत में समुचित नमी बनाये रखने हेतु आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई प्रत्येक 20–25 दिन के अन्तराल पर करते रहना चाहिये।
- खर–पतवार नियंत्रण हेतु कस्सी/फावड़े से गुड़ाई करना श्रेयस्कर है। अतः प्रत्येक सिंचाई के उपरान्त मार्च–जून तक गुड़ाई फाबड़े या कल्टीवेटर से करनी चाहिए। श्रमिक की समस्या होने पर पहली सिंचाई उपरान्त गुड़ाई करके गन्ने की सूखी पत्तियां बिछानी चाहिए। यदि इसे भी करना सम्भव न हो तो गन्ना बुवाई के 7–10 दिन के मध्य पेन्डीमिथेलीन खरपतवार नाशी रसायन का 3.3 ली0 1150 ली0 पानी में घोलकर समान रूप से छिड़काव करना चाहिए।
- एजोटोबैक्टर या एजोस्पाइरिलम 5 किग्रा0/हे0 की दर से प्रथम सिंचाई के उपरान्त पौधों के पास डालना चाहिए।
- पी0एस0बी0 5 किग्रा/हे0 की दर से प्रथम सिंचाई के उपरान्त डालें।

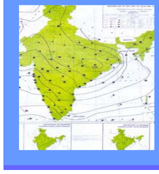

Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

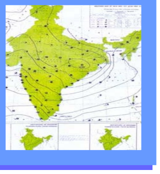

सब्जियाँ

- कृषक भिण्डी, करेला, लौकी, काशीफल ककड़ी एवं तरबूज की बुआई करें।
- बीज हेतु आलू के मध्यम आकार के कन्दों का भण्डारण मध्य मार्च तक अवश्य कर लें।
- आलू को भण्डारण के पूर्व कन्दों की छटाई, ग्रेडिंग एवं बोरिक एसिड के 3 प्रतिशत घोल से 30 मिनट तक उपचारित करें।
- टमाटर एंव बैंगन में फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- बैंगन की अगली फसल हेतु क्षेत्रीय संस्तुत प्रजातियों की बीजशोधन उपरान्त नर्सरी में बुआई करें।

फल

- आम आंवला, अमरूद, नींबू के नये बागों में भिण्डी, उर्द तथा मूँग का अंतःसस्यन करें।
- आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु कार्बरिल या क्वीनालफास या मोनोक्रोटोफास या क्लोरपाइरीफास का संस्तुति अनुसार प्रयोग करें।
- आम में खर्रा या दहिया रोग से बचाव के लिए बौर आने के तुरन्त बाद विलयशील गन्धक 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- आम की विकृत मंजरियों को काटकर हटा दें।

रेशम

- कीटपालक कीटपालन में मोल्ट के समय विशेष सावधानी रखें तथा प्रत्येंक मोल्ट पर आर.के.ओ. का प्रयोग करने के उपरान्त ही पत्ती दें।
- आर्द्रता को नियंत्रित करने के लिये कीटपालन कक्ष में एवं रियरिंग बेड में चूने का प्रयोग करें।

पशुपालन

- पशुओं मे मुँहपका–खुरपका रोग की रोकथाम हेतु टीकाकरण करायें। प्रदेश के 48 संवेदनशील जनपदों में टीकाकरण का विथेष अभियान एफ.एम.डी.सी.पी. के अर्न्तगत चलाये जा रहा है पशुपालक इसका लाभ उठा सकते है।
- पशुओं को खनिज लवण एवं संतुलित पशु आहार अवश्य खिलायें।
- रबी चारा फसलों में सिंचाई करते रहें जिससे बढ़वार प्रभावित न होने पाये।
- जायद चारा फसलों की लोबिया के साथ मिश्रित बुआई करें जिससे गर्मी के मौसम में भी पौष्टिक हरा चारा प्राप्त हो सके।
- पशुपालन विभाग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में कैम्पों का आयोजना किया जा रहा है जिसमें पशुपालक पशुओं की चिकित्सा, बॉझपन, चिकित्सा, गर्भ परीक्षण व अन्य सभी पशु संबंधी समस्याओं का निदान प्राप्त कर सकते है।

मत्स्य

- कामन कार्प का मत्स्य बीज हैचरियों पर उपलब्ध है मत्स्य पालक कामन कार्प के मत्स्य बीज का संचय करें।
- तालाब में जाल चलवाकर मछलियों की वृद्धि एवं स्वास्थ्य का निरीक्षण कर लें।
- बड़ी मछलियों की निकासी कर विक्रय करें साथ ही मछलियों के स्वास्थ का निरीक्षण भी करें।
- शरीर भार का 1 से 2 प्रतिशत पूरक आहार मछलियों को प्रतिदिन दिन में एक बार अवश्य दें।
- मत्स्य पालक अपने जनपद में स्थापित मत्स्य पालक विकास अभिकरण के सम्पर्क में रहें।

वानिकी

- बिलायती बबूल, अंवला के बीजों की बुआई रूट ट्रेनर/थैलियों में कर लें।
- अपनी पौधशाला के अंकुरण कक्ष में पौधों का प्रतिरोपण रूट ट्रेनर/पॉलीथीन थैलों में कर, छाया घर (शेड हाउस) में स्थानान्तरित कर लें।
- सुरक्षा व्यवस्था तथा क्षेत्रों में गड्डा खुदान कार्य पूर्ण कर लें।
- अक्टूबर से मार्च के प्रथम पक्ष तक प्रदेश की झीलों में रहने वाले प्रवासी पक्षी मार्च प्रथम सप्ताह में वापस जाने हेतु झुण्ड में तैयार रहते है। इस समय इन पक्षियों को शिकारियों से सर्वाधिक खतरा रहता है। इस अवधि में शिकारियों की जानकारी होने पर इसकी सूचना निकटतम वनकर्मी को दें।

- **नोटः**
- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- क्राप वेदर वाच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 7 अप्रैल, 2010 को पूर्वान्ह 11.00 बजे आयोजित की जायेगी।